पाठ 15

खग, उड़ते रहना

(प्रस्तुत कविता में पक्षी के माध्यम से मनुष्य को जीवन भर क्रियाशील रहने का सन्देश दिया गया है।)

खग, उड़ते रहना जीवन भर।

भूल गया है तू अपना पथ, और नहीं पंखों

में भी गति,

किन्तु लौटना पीछे पथ पर, अरे ! मौत से

भी है बदतर।

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

मत डर प्रलय - झकोरों से तू, बढ़

आशा - हलकोरों से तू,

क्षण में अरि - दल मिट जाएगा, तेरे

पंखों से पिसकर।

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

यदि तू लौट पड़ेगा थककर, अंधड़ काल - बवंडर से डर,

प्यार तुझे करने वाले ही, देखेंगे तुझको हँस - हँसकर|

खग उड़ते रहना जीवन भर !

और मिट गया चलते - चलते, मंजिल - पथ तय करते - करते,

खाक चढ़ाएगा जग , उन्नत भाल और आँखों पर|

खग, उड़ते रहना जीवन भर !

- गोपाल दस 'नीरज'

गोपालदास 'नीरज' का जन्म 8 फरवरी सन् 1926 ई. को हुआ| ये प्रेम और सौन्दर्य के अन्यतम गायक और वर्तमान समय में सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं| इन्होंने अपनी मर्मस्पर्शिनी काव्यानुभूति एवं सहज भाषा द्वारा हिंदी कविता को नया मोड़ दिया गया है|

शब्दार्थ

खग = पक्षी। **बदतर** = खराब। **प्रलय** = विनाश, संहार। **अरि-दल** = शत्रुओं का झुंड। **मंजिल-पथ** = गंतव्य स्थल तक पहुँचने का मार्ग। **खाक** = चिताभस्म, राख। **भाल** = मस्तक।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अपनी पसन्द के किसी पक्षी के बारे में कुछ वाक्य लिखिए।

2. निम्नलिखित उदाहरण के आधार पर किसी एक पक्षी का विवरण तैयार करें-

उदाहरण-

पक्षी का नाम - कबूतर।

आकार - मध्यम|

रंग - हल्का आसमानी या सफेद।

प्रकृति - सजीव, भोली-भाली।

भोजन - शाकाहारी।

घोंसला - सूखी लकड़ियों, घास या तिनकों से घोंसला बनाना।

घोंसला बनाने का समय - वर्षा ऋतु के आस-पास।

अण्डे - सफेद या भूरे।

शत्रु - बाज।

देखे जाने की तिथि और समय - पूरे वर्ष दिखायी देता है।

अन्य बातें - छोटी चोंच कम ऊँचाई तक उड़ना, घरों में घोंसला बनाकर रहना।

विचार और कल्पना

1. सामने दिये गये चित्र को देखकर अपने विचार पाँच पंक्तियों में लिखिए-

2. उड़ता हुआ पक्षी हमें आगे बढ़ने अर्थात् उन्नति करने का संदेश देता है। इसी प्रकार बताइए कि उगता सूरज, हिमालय, लहराता सागर, फलों से लदे वृक्ष, खिले फूल हमें क्या संदेश देते हैं? प्रत्येक पर अपने विचार दो-दो पंक्तियों में लिखिए।

3. कवि इस गीत के माध्यम से हमें क्या संदेश देना चाहता है?

4. यदि आप पक्षियों की तरह उड़ सकें तो सर्वप्रथम आप कहाँ जाना चाहेंगे और क्यों?

गीत से

1. मौत से भी बदतर क्या है?

2. मार्ग में कठिनाई आने पर क्या करना चाहिए?

3. जो लोग अपने लक्ष्य तक पहुँचने के प्रयास में समाप्त हो जाते हैं, उनको संसार किस तरह सम्मान देता है?

4. कार्य को बिना पूरा किये हुए छोड़कर लौट आने वाले व्यक्ति को संसार किस दृष्टि से देखता है?

5. दी गयी कविता की पंक्तियों को पढ़िए और उनके नीचे दिये गये सही भावार्थ पर सही का चिह्न लगाइए-

और मिट गया चलते-चलते, मंजिल-पथ तय करते-करते,

खाक चढ़ाएगा जग, उन्नत भाल और आँखों पर।

(क) हे पक्षी ! यदि चलते-चलते और मंजिल पाने में खाक मिलती है तो तेरा ललाट ऊँचा रहेगा।

(ख) हे पक्षी ! (हे मानव !) यदि अपनी मंजिल को पाने के लिए अपने पथ पर उड़ते-उड़ते (चलते-चलते) मिट जाओगे तो भी कोई हानि नहीं होगी, क्योंकि तब यह संसार बड़े गर्व से तुम्हारे बलिदान (चिताभस्म) को अपने सिर आँखों पर चढ़ाएगा।

(ग) हे मानव ! अपनी मंजिल की खाक अपने ऊँचे मस्तक और आँखों पर चढ़ाओ। (घ) हे खग ! यदि राह चलते-चलते और मंजिल पाने में तू मर गया तो तू मिट्टी में मिल जायेगा।

भाषा की बात

1. दिये गये शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए -

पथ, आशा, अरि, आँख।

2. निम्नलिखित के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

पक्षी, आकाश, धरती, पहाड़।

3. योजक-चिह्न अलग-अलग सन्दर्भों में प्रयुक्त किये जाते हैं। पाठ में आशा-हलकोरों, अरि-दल तथा चलते-चलते शब्दों में आये योजक-शब्द भिन्न अर्थ वाले हैं। बताइए कि उक्त तीनों स्थानों पर प्रयुक्त योजक-चिह्नों के क्या अर्थ हैं ?

4. कविता में आये उन शब्दों को छाँटकर लिखिए जिनका अर्थ आपको नहीं पता है-

- इन शब्दों का अर्थ शब्दकोश से ढूँढकर लिखिए।

- अब इन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए|

इसे भी जानें

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, उ0 प्र0 में स्थित है।